काव्य का प्रयोजन –

काव्य शास्त्र की शास्त्रीयता इसी में निहित है कि
यहाँ भी संबंध, अधिकारी, विषय और प्रयोजन आदि का अनेक
आचार्यों द्वारा विवेचन हुआ है। अधिकारी और विषय-वस्तु
के बीच एवं विषयवस्तु तथा प्रयोजन के बीच अवश्य ही
कार्य-कारण भाव है, इसे संबंध कहते हैं। काव्य या काव्य-
शास्त्र के अनुशीलन का फल प्रयोजन है।

काव्य का प्रयोजन उस शास्त्र के अनेक ग्रंथों में
पृथक्-पृथक् निरूपित हुआ है। भरत से लेकर आधुनिक
युग के विचारकों ने काव्य के प्रति जनसामान्य के आकर्षण
के कारणों की मीमांसा करते हुए कुछ महत्वपूर्ण बातें कही
हैं। नाट्य-प्रयोजन पर भरत ने कहा कि – 'दुःखार्त्तानां
शोकार्त्तानां श्रमार्त्तानां लोकानुरंजनं नाटकम् — दुःखी
क्लान्त, शोकाकुल व्यक्तियों को शान्ति देना; धर्म, यश, आयु, बुद्धि
का विकास करते हुए हितकर उपदेश देना ये नाट्य
का फल है (नाट्यशास्त्र 1/114-5) कुछ आचार्यों ने
पुरुषार्थ के सम्पादन में कौशल, कला-नैपुण्य, कीर्ति
और आनन्द को काव्य का फल माना है (भामह 1/2,
काव्यालंकार) कीर्ति और प्रीति को काव्य का फल मानने
वाले अनेक आचार्य हुए – 'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु
च। करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्।'

विश्वनाथ ने कहा – चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्प-
धियामपि (सा० दर्पण 1/2) अर्थात् काव्य से अल्पज्ञों को
भी बिना प्रयास के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की
प्राप्ति हो जाती है।

आगे के आचार्यों में रुद्रट, कुन्तक आदि
ने विपत्ति निवारण (अनर्थोपशम) एवं व्यवहारज्ञान
आदि अन्य तत्वों को जोड़ा।

B.A. III Yr.
Govt. [illegible]
Skt. Deptt.

अपितु यौगिक है - "जो काव्य को परिपूर्ण कर दे, सुन्दर बना दे, वह सौन्दर्य ही अलंकार है - "काव्यं ग्राह्यमलंकारात्। सौन्दर्यमलंकारः' (काव्यालंकारसूत्रवृत्ति - 1|1|1)

वैसे काव्य की आत्मा, वे रीति अर्थात् पदसंघटना को स्वीकार करते हैं - 'रीतिरात्मा ह्र काव्यस्य' (काव्या० 1|2|6)

आनन्दवर्धन के अनुसार काव्य की आत्मा 'ध्वनि' है। राजशेखर यह महत्त्व 'रस' को देना चाहते हैं। कुन्तक शब्दार्थ सहभाव को दृढ़ता से स्वीकार करते हुए काव्य का प्राणतत्व 'वक्रोक्ति' को मानते हैं। क्षेमेन्द्र यह स्थान 'औचित्य' को देने के पक्ष में हैं। भोज का लक्षण, काव्य में दोषरहित गुणशीलता, अलंकारयुक्तता के साथ-साथ रसात्मकता को आवश्यक सिद्ध करता है। इस लक्षण परम्परा का सुचिन्तित परिणाम आचार्य मम्मट की कारिका में अभिव्यक्त हुआ है।

Last Para. साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् 'रसयुक्त वाक्य काव्य है।' काव्य की परिभाषा दी।

पण्डितराज जगन्नाथ ने शब्दार्थ सहभाविता की दीर्घ-परम्परा को अमान्य घोषित करते हुए केवल शब्द को ही काव्य स्वीकारा, उस शब्द को रमणीयार्थ का प्रतिपादक अवश्य होना चाहिए - 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द काव्यम्' (रसगंगाधर)

इस प्रकार इसमें काव्य के लिए उपादेय ~~तथा हेय विषयों के अतिरिक्त~~ रस, ध्वनि, गुण, रीति, अलंकार विषयों का अनुशीलन होता है। संस्कृत-काव्यशास्त्र इसे अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति का विषय बनाने का प्रयास करता है, यही उसकी महत्ता है।

Contd.

Scanned with CamScanner